डॉ. पांडुरंग पाटील
एम.ए., पीएच्.डी.
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
तथा
अध्यक्ष, हिन्दी अध्ययन मण्डल,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु शोध-प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

(डॉ. पांडुरंग पाटील)
अध्यक्ष
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४

कोल्हापुर।
तिथि :- 30 JUN 1999

डॉ. पांडुरंग पाटील
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर- 416004

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री. जैनुद्दीन चंदूलाल शेख ने मेरे निर्देशन में "अज्ञेय के उपन्यासों के प्रमुख पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन" लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम. फिल. उपाधि के लिए लिखा है। यह कार्य पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है। शोधार्थी ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है। जो तथ्य प्रबन्ध में प्रस्तुत किये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही तथा मौलिक हैं। मैं संस्तुति करता हूँ कि इसे परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

स्थान:- कोल्हापुर।

तिथि :- 30 JUN 1999

(डॉ. पांडुरंग पाटील)

शोध-निर्देशक
अध्यक्ष
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४

प्रख्यापन

"अज्ञेय के उपन्यासों के प्रमुख पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन" यह लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक कृति है जो एम.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए शोध प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की है। यह कृति इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है।

शोध-छात्र

(जैनुद्दीन चंदूलाल शेख)

कोल्हापुर।

तिथि :- 30 JUN 1999

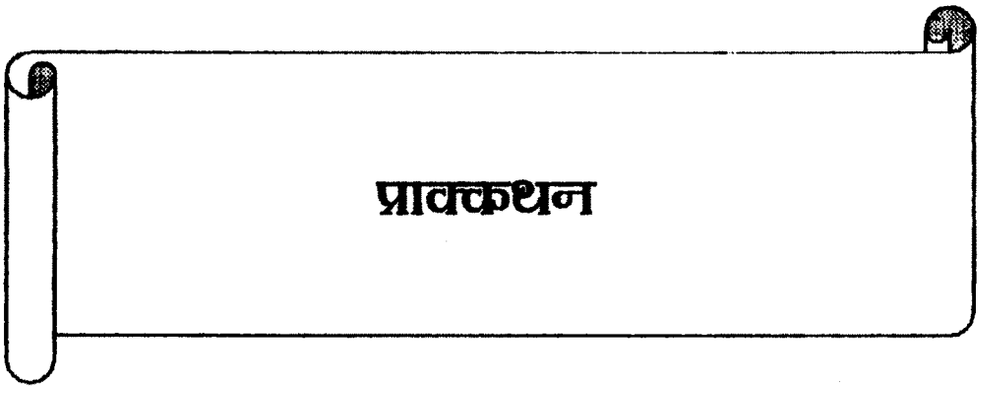

प्राक्कथन

प्राक्कथन

मेरी उपन्यास पढने में रूचि रही है। शिवाजी विश्वविद्यालय में एम् .ए. की पढ़ाई करते समय अलग अलग प्रकार के उपन्यासों को पढ़ने का मौका मिला, जिनमें सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक मनोवैज्ञानिक आदि प्रकार के उपन्यास थे। एम्.ए. की पढ़ाई के पश्चात् मेरे मन में स्थित ज्ञान लालसा की पूर्ति हेतु शोध-कार्य करने का मेरा निश्चय स्वाभाविक ही था। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के चरित्रों की मानसिकता को लेकर मेरे मन में जिज्ञासा थी अत: मैंने अपने श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ. पांडुरंग पाटील जी से परामर्श किया और विविध मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का अध्ययन प्रारंभ किया। जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय आदि मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों में मुझे अज्ञेय ही सबसे सशक्त जान पड़े। अत: मैंने डॉ. पाटील जी से अज्ञेय के उपन्यासों पर शोध कार्य करने की अपनी इच्छा प्रकट की।

उपन्यास विधा साहित्य की अन्य विधाओं से अधिक लोकप्रिय मानी जाती है। मनुष्य की सभी भावनाओं तथा विचारों का चित्रण उपन्यास विधा में सशक्त रूप में हुआ है। उपन्यास के माध्यम से व्यक्ति को समझा जा सकता है। उपन्यासकार अपने उपन्यासों में समाज की स्थिति तथा उसकी गतिविधियों का चित्रण करते हैं। उपन्यास में सामाजिक मूल्यों के साथ समस्त मानव जीवन का चित्रण होता है। मनुष्य के विविध भावों का प्रतिबिंब साहित्य है। साहित्य द्वारा मनुष्य अपने भाव, विचार, भावनाओं को उजागर करता है। आधुनिक साहित्यकार मनोवैज्ञानिक शैली में अपना साहित्य लिखकर मानव की भाव भावनाओं को सैद्धांतिक रूप में चित्रण कर रहे हैं। फ्रायड, एडलर, युंग जैसे महान मनोवैज्ञानिकों ने मनुष्य के मन का गहरा अध्ययन कर `मन` को सिद्धांत के आधार पर प्रस्तुत किया है। इसीलिए उपन्यास साहित्य को मानव के व्यक्तित्त्व और उसके जीवन का प्रतिबिंब कहा जाता है। अज्ञेय के तीनों उपन्यास मनोवैज्ञानिक ही हैं। इसीलिए मेरे शोध निर्देशक जी से ``अज्ञेय के उपन्यासों के प्रमुख पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन`` विषय प्राप्त हुआ।

प्रस्तुत विषय का अध्ययन करते वक्त मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न खडे हुए थे ---

1. अज्ञेय जी के व्यक्तित्त्व का उनके कृतित्त्व पर क्या परिणाम हुआ है ?
2. मनोविज्ञान क्या है ?
3. तत्त्वों की दृष्टि से अज्ञेय जी के उपन्यास कहाँ तक सफल हुए हैं ?

4. अज्ञेय जी का शेखर कुंठित क्यों बनता है ?

5. अज्ञेय जी के स्त्री पात्रों की क्या विशेषताएँ हैं ?

इन प्रश्नों के उत्तर ढुँढने का प्रयास मैंने निम्नलिखित पाँच अध्यायों में किया है।

प्रथम अध्याय :- `अज्ञेय : व्यक्तित्व एवं कृतित्व`

रचनाकार के व्यक्तित्व का उसके साहित्य पर प्रभाव होता ही है। इसीलिए प्रथम अध्याय में लेखक के परिचय के साथ उनके विचारों को प्रभावित करनेवाले व्यक्ति, युगीन परिवेश तथा घटनाएँ प्रस्तुत की हैं। उनके कृतित्व में उनके संपूर्ण साहित्य के साथ उनकी बहुचर्चित कृतियाँ, पुरस्कार तथा पुरस्कार से सम्मानित कृतियों का विवेचन किया है। अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

द्वितीय अध्याय :- `मनोविज्ञान : स्वरूपगत विवेचन`

प्रस्तुत अध्याय में मैंने मनोविज्ञान का स्वरूप स्पष्ट किया है। मनोविज्ञान की भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने की हुई परिभाषाएँ दी हैं। बाद में मनोविज्ञान के विकास को स्पष्ट करते हुए उसकी विभिन्न शाखा एवं उपशाखाओं का जिक्र किया है। आज के युग में मनोविज्ञान के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए उसके उद्देश्य और उपयोगिता को भी स्पष्ट किया है। अंत में प्राप्त निष्कर्षों को दर्ज किया हैं।

तृतीय अध्याय :- `अज्ञेय जी के उपन्यासों का सामान्य परिचय` ✓

इस अध्याय में मैंने अज्ञेय द्वारा लिखित तीनों उपन्यास `शेखर : एक जीवनी`, `नदी के द्वीप` तथा `अपने-अपने अजनबी` की संक्षिप्त कथावस्तु स्पष्ट करते हुए कथावस्तु का उपन्यास के तत्त्वों के अनुसार अनुशीलन किया है। अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

चतुर्थ अध्याय :- `विवेच्य उपन्यासों में चित्रित प्रमुख पुरूष पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन` ✓

इस अध्याय में मैंने तीनों उपन्यासों के प्रमुख पुरूष पात्र -शेखर, भुवन तथा चंद्रमाधव का मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया है। प्रत्येक पात्र के अंतर्द्वंद्व को मनोवैज्ञानिक ढंग से स्पष्ट किया है। अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

पंचम अध्याय :- `उपन्यासों में चित्रित प्रमुख स्त्री पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन`

अज्ञेय जी के तीनों उपन्यासों के प्रमुख स्त्री पात्र शशि, रेखा, गौरा, योके तथा सेल्मा का मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत अध्याय में किया है। अंत में प्राप्त निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

अंत में उपसंहार के अंतर्गत इस लघु-शोध प्रबंध का सार रूप दिया है। उसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष दिए हैं। तत्पश्चात् अंत में संदर्भ ग्रंथ-सूची दी है।

ऋण-निर्देश

प्रस्तुत शोधकार्य की पूर्ति आदरणीय गुरूवर्य तथा हिंदी विभाग के कुशल अध्यक्ष आदरणीय डॉ. पांडुरंग पाटील जी के कृपापूर्ण मार्गदर्शन का फल है। उन्होंने अपनी व्यस्तता के बावजूद भी मेरे इस शोधकार्य में सहायता की। आपके प्रति शब्दों में कृतज्ञता प्रकट करना संभव नहीं है। बस, यही कहूँगा कि आपके प्रति हरदम कृतज्ञ ही रहूँगा और भविष्य में भी आपके आशीर्वाद और मागर्दशन की कामना करूँगा।

हिंदी विभाग के `पितामह` श्रद्धेय गुरूवर डॉ. वसंत मोरे जी तथा डॉ. अर्जुन चव्हाण जी का भी मैं ऋणी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मार्गदर्शन कर इस कार्य को पूरा करने में मेरी मदद की है।

मेरे जीवन का कोई भी कार्य माता-पिता के बिना संपन्न नहीं हुआ है। उन्हीं की आशीर्वाद का फल है कि मैं अपने कार्य की पूर्ति में सफल हुआ हूँ। जीवनभर अनेक समस्याओं का सामना करते हुए उन्होंने मुझे यहाँ तक पहुँचाया है। मेरे दो बडे भाईयोंने जिन्होंने हर समय अपनी कठिनाइयों की ओर ध्यान न देकर मेरी हर कठिनाइयों का सफलतापूर्वक समाधान किया है। मेरे बहनोई शब्बीर सुतार जी का भी इस काम में काफी योगदान रहा है। आज मैं जो भी हूँ इन सभी की बदौलत ही हूँ। अत: इनका आभार मानकर मैं इनके ऋण से मुक्त नहीं होना चाहता हूँ क्योंकि ऋण तो गैरों का चुकाया जाता है, अपनों का नहीं।

मैं हर समय कुछ न कुछ करने की प्रेरणा जीनसे पाता हूँ वे श्रद्धेय श्री. अभिमन्यू वाघ साहब जी की कृपादृष्टि हमेशा मेरे उपर रही है। उनका तथा मैं अपने जीवन का सबकुछ जिन्हें मानता हूँ, जो मेरे हर अच्छे काम से प्रेरक हैं वे मेरे परममित्र मनोज कोष्टी, तानाजी जावळे (सर) व छोटे भाईसम सज्जन जाधव को मैं सहृदय धन्यवाद देता हूँ।

आज के इस भौतिक युग में सच्चे मित्र मिलना मुश्किल ही नहीं अपितु नामुमकिन है। परंतु इस मामले में मैं बहुत ही सौभाग्यशाली हूँ। मुझे अविराज शिंदे, नंदू माने, बबन सातपुते, डॉ. अरूण गंभीरे, डॉ. भारत कुचेकर, डॉ. अनिल साळुंखे, संपतराव जाधव, अशोक बाचुळकर, मिलिंद साळवे, गिरिष काशिद, अमोल कासार, कु. विजया पाटील, कु. मनिषा सुर्वे और कु. सिंधु खिलारे जैसे सच्चे मित्र मिले और जिन्होंने इस लघु-शोध प्रबंध को पूरा करने में मेरी मदद की। अत: इनके प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इस लघु-शोध-प्रबंध को संपन्न करने में शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर के ग्रंथालय का बहुमूल्य योगदान रहा है। इस ग्रंथालय के प्रमुख एवं कर्मचारियों का मैं हृदय से आभारी हूँ। हिंदी विभाग के क्लर्क श्री. अनिल साळोखे तथा कांबळे जी ने भी अच्छा सहयोग दिया उनका भी मैं आभारी हूँ। मैं उन कृतिकारों और विद्वानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिनकी विद्वानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिनकी सृजनात्मक और वैचारिक रचनाओं का उपयोग मैंने इस शोधकार्य में किया है।

इस लघु-शोध-प्रबंध का टंकलेखन कोल्हापुर के श्री. मिलिंद भोसले जी ने बढी तत्परता से एवं उत्तम ढंग से पूरा किया अत: मैं उनके प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ। अंत में उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ , जिन्होंने जाने-अनजाने में ही सही इस कार्य में मेरी मदद की है। उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर विनम्रता से विद्वानों के सामने मैं अपने लघु-शोध-प्रबंध को परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

कोल्हापूर।

तिथि :-

शोध-छात्र

(जैनुद्दीन शेख)

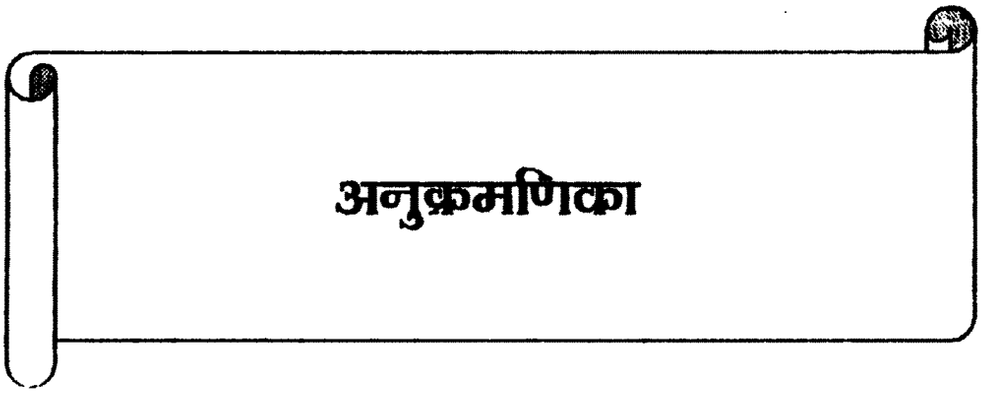

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

प्रथम अध्याय : ``अज्ञेय : व्यक्तित्व एवं कृतित्व`` **1 से 12**

1.1 जीवन परिचय

1.1.1 जन्म

1.1.2 माता-पिता

1.1.3 शिक्षा-दीक्षा

1.1.4 नौकरी

1.1.5 वैवाहिक जीवन

1.1.6 पुरस्कार एवं मान-सम्मान

1.1.7 मृत्यु

1.2 व्यक्तित्व

1.2.1 क्रांतिकारक : अज्ञेय

1.2.2 घुम्मकड : अज्ञेय

1.2.3 संपादक : अज्ञेय

1.3 कृतित्व

1.3.1 उपन्यास

1.3.2 कहानी

1.3.3 काव्य

1.3.4 नाटक

1.3.5 निबंध एवं विचारात्मक गद्य

1.3.6 यात्रा वर्णन

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय :``मनोविज्ञान : स्वरूपगत विवेचन`` **13 से 31**

2.1 मनोविज्ञान की परिभाषा

2.1.1 डॉ. हरदेव बाँहरी

2.1.2 `आधुनिक हिंदी शब्दकोश`
2.1.3 डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
2.1.4 लालजीराम शुक्ल
2.1.5 डॉ. कमला आत्रेय
2.1.6 प्लेटो
2.1.7 जेम्स
2.1.8 मैकूगल
2.1.9 पिल्सवरी
2.1.10 वुडवर्थ
2.1.11 A Dictionary of psychology.
2.1.12 The Oxford English Dictionary.
2.2 मनोविज्ञान का स्वरुप
2.2.1 मनोविज्ञान की शाखाएँ
2.2.1.1 सैद्धांतिक मनोविज्ञान
2.2.1.2 व्यावहारिक मनोविज्ञान
2.3 मनोविज्ञान का सैद्धांतिक पक्ष
2.3.1 फ्रायड के मनोविज्ञान का सैद्धांतिक पक्ष
2.4 मनोविज्ञान का महत्त्व
2.5 मनोविज्ञान का उद्देश्य
2.6 मनोविज्ञान की उपयोगिता
2.7 मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण में परस्पर अंतर
निष्कर्ष

तृतीय अध्याय :- ``अज्ञेय के उपन्यासों का सामान्य परिचय`` 32 से 50

3.1 शेखर : एक जीवनी
3.2 नदी के द्वीप
3.3 अपने-अपने अजनबी
निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय :- ``विवेच्य उपन्यासों में चित्रित प्रमुख
पुरूष पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन`` 51 से 67

4.1 शेखर

4.1.1 जिज्ञासुवृत्ति

4.1.2 अहंवादी

4.1.3 कामुकता

4.1.4 भय

4.1.5 विद्रोही एवं क्रांतिकारी

4.2 भुवन

4.2.1 सौंदर्यप्रियता

4.2.2 संवेदनशील

4.2.3 कर्तव्यों के प्रति सजग

4.2.4 विवशता

4.3 चंद्रमाधव

4.3.1 सनसनी खोज की चाह

4.3.2 कामुकता

4.3.3 असफल प्रेमी

4.3.4 गौरा पर रौब ज़माने की कोशिश

4.3.5 ईर्ष्या-भाव

4.3.6 भोगवादी

4.3.7 निराशावादी

निष्कर्ष

पंचम अध्याय :- ``विवेच्य उपन्यासों में चित्रित प्रमुख
स्त्री पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन`` 67 से 94

5.1 शशि

5.1.1 प्रतीक रूप में शशि

5.1.2 आत्मोत्सर्ग की साक्षात प्रतिमूर्ति

5.1.3 विवेक और अनुराग की भावना

5.1.4 शारीरिक और मानसिक यातनाओं की शिकार

5.1.5 कर्तव्यपरायणा

5.1.6 प्रेरणादायी

5.1.7 मानसिक उलझन

5.2 रेखा

5.2.1 प्रतीक अर्थ में रेखा

5.2.2 त्यागमयी एवं उदात्त प्रेमिका

5.2.3 संघर्ष की भावना

5.2.4 संवेदनशील नारी

5.2.5 प्रभावशाली व्यक्तित्व

5.3 गौरा

5.3.1 गौरा का प्रतीक अर्थ

5.3.2 प्रतिभासंपन्न व्यक्तित्व

5.3.3 विचारशील नारी

5.3.4 संगीत के माध्यम से दु:ख का अंत

5.3.5 सभी के प्रति आत्मीयता और सम्मान का भाव

5.3.6 निस्वार्थ प्रेम भावना

5.3.7 संयमी

5.4 योके

5.4.1 साहस और प्रेम भावना से ओत-प्रोत

5.4.2 योके का मानसिक द्वंद्व

5.4.3 अनास्थावादी

5.4.4 क्षणवादी प्रवृत्ति

5.4.5 कुंठित

5.4.6 अहंवादी

5.4.7 मृत्युभय से आक्रांत

5.4.8 बलात्कारित पागल योके

5.5 सेल्मा

5.5.1 अहंवादी

5.5.2 अवसरवादी

5.5.3 आशावादी एवं मृत्यु से संघर्षरत

5.5.4 परिवर्तनशील

5.5.5 मृत्यु को तटस्थ भाव से देखना

निष्कर्ष

उपसंहार **95 से 101**

संदर्भ ग्रंथ सूची **102 से 104**

□□□□